INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VII- 2nd Lang	Department: Hindi	Class work
Lesson-12 खानपान की बदलती तस्वीर	Topic: - प्रश्नोत्तर	Note: Pl write in your NB

अति लघु प्रश्न

प्रश्न1 उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?

उत्तर- उत्तर भारत में **खान-पान की संस्कृति** में बदलाव आया है।

प्रश्न2. कितने वर्षों में हमारे खानपान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है?

उत्तर- खानपान की संस्कृति में बड़ा बदलाव **दस-पंद्रह वर्षों से** आया है।

प्रश्न3. स्थानीय व्यंजनों को क्या कहकर पुकारने का चलन बढ़ा है?

उत्तर- स्थानीय व्यंजनों को **एथनिक कहकर** पुकारने का चलन बढ़ा है।

प्रश्न4. दक्षिण भारत का मुख्य व्यंजन क्या है?

उत्तर- दक्षिण भारत का मुख्य व्यंजन **इडली-ढोसा-बड़ा-सांभर-रसम** इत्यादि है।

प्रश्न5. उत्तर भारत की कौन सी संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है?

उत्तर- भारत की **'ढाबा'** संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है।

प्रश्न6. खानपान का क्या अर्थ है?

उत्तर- **खाने-पीने का ढंग** या **रीति-रिवाज** है।

लघु प्रश्न

प्रश्न 1. देश में खानपान की संस्कृति में बदलाव के मुख्य कारण क्या है?

उत्तर- आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों-तबादलों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खानपान की चीज़ें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँचीं हैं। खानपान के नई तहज़ीब और नए व्यंजनों से लोग अवगत हुए है।

प्रश्न 2. खानपान की संस्कृति से राष्ट्रीय एकता का क्या संबंध है?

उत्तर- स्कूलों में लंच के समय जब बच्चे घर से लाए टिफ़िन को साथ में खोलते हैं तो अलग-अलग राज्यों के व्यंजनों की खुशबू से राष्ट्र की खुशबू मिलती है। लेखक ने इस संस्कृति को ही राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताया है।

प्रश्न3. **'ढाबा'** संस्कृति से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर- ढाबा संस्कृति से लेखक का यह आशय है कि सड़कों के किनारे बने ढाबों पर मिलने वाला खाना। हर जगह के ढाबों पर अलग संस्कृति का खाना मिलता है। इसमें तंदूर की रोटियाँ, पराठे, दाल, राजमा, कढ़ी, चावल, बिरयानी, साग, छोले-भटूरे, कुलचे, अचार आदि होते हैं। तंदूर की रोटियों का अपना अलग ही स्वाद होता है।

प्रश्न4. स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार क्यों ज़रूरी है?

उत्तर- स्थानीय व्यंजन किसी न किसी स्थान विशेष से जुड़े हैं वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। उनसे हमारी पहचान होती है। पश्चिमी प्रभाव के कारण हम इनको भूलते जा रहे हैं। इन सब कारणों से भारतीय व्यंजनों का पुनरुद्धार ज़रूरी है।

दीर्घ प्रश्न-उत्तर

प्रश्न1. खानपान के संदर्भ में मिश्रित संस्कृति का तात्पर्य स्पष्ट करें?

उत्तर- 'मिश्रित संस्कृति' बाहरी और स्थानीय व्यंजनों का मिश्रण है। मिश्रित संस्कृति में स्थानीय व्यंजनों और बाहर की पद्धति से पकाये जाने वाले व्यंजनों को जोड़ कर भोजन का एक नया रूप तैयार किया जाता है। इसे नई पीढ़ी द्वारा काफ़ी अपनाया जा रहा है। पार्टियों में और प्रीतिभोज में भी इसी तरह के भोजन की अधिक माँग हो रही है।

प्रश्न2. खानपान में बदलाव के कौन-कौन से फ़ायदे हैं? लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित क्यों है?

उत्तर- खानपान में बदलाव से निम्नलिखित फ़ायदे हैं-

1. एक प्रदेश की संस्कृति का दूसरे प्रदेश की संस्कृति से मिलना।
2. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलना।
3. बच्चों व बड़ों को मनचाहा भोजन मिलना।
4. देश-विदेश के व्यंजनों की जानकारी होना।

खानपान में बदलाव से होने वाले फ़ायदों के बावजूद लेखक चिंतित हैं क्योंकि मिश्रित संस्कृति को अपनाने से नुकसान भी हो रहे हैं जो इस प्रकार हैं-1-स्थानीय व्यंजनों का चलन कम होने के कारण नई पीढ़ी स्थानीय व्यंजनों के बारे में जानती ही नहीं है।

2- खाद्य पदार्थों में शुद्धता की कमी होती जा रही है।

3- उत्तर भारत के व्यंजनों का स्वरूप बदलता ही जा रहा है।

प्रश्न3. खानपान की संस्कृति का **'राष्ट्रीय एकता'** में क्या योगदान है?

उत्तर- खानपान की संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने की चीज़ों का प्रभाव पूरे देश पर पड़ा है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण में और दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों में मेलजोल भी बढ़ा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।